वैश्विक शासन में सुधार: BRICS में भारत की नेतृत्व क्षमता और वैश्विक दक्षिण के लिए समर्थन

समाचार में क्यों?

6-7 जुलाई, 2025 को रियो डी जनेरियो में आयोजित 17वें BRICS शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने UN, IMF और विश्व बैंक जैसे प्रमुख वैश्विक संस्थाओं में वैश्विक दक्षिण (Global South) का अधिक प्रतिनिधित्व होने की आवश्यकता पर जोर दिया। उनके भाषण में यह बात प्रमुखता से उठाई गई कि एक अधिक समावेशी और संतुलित वैश्विक व्यवस्था की जरूरत है, जो विकासशील देशों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करे। इस सम्मेलन के दौरान, पीएम मोदी ने घाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, अर्जेंटीना, ब्राजील और नामीबिया की पांच देशों की यात्रा की, जिससे भारत की बढ़ती नेतृत्व क्षमता को दर्शाया गया और वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ साझेदारी बनाने और बहु-ध्रुवीय (Multipolar) विश्व के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने का प्रयास किया।

संदर्भ

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बनाए गए वैश्विक संस्थान जैसे **UN, IMF** और विश्व बैंक अभी भी कुछ देशों द्वारा संचालित पुराने शक्ति संरचनाओं को प्रतिबिंबित करते हैं। जैसे-जैसे दुनिया बहु-ध्रुवीयता **(multipolarity)** की ओर बढ़ रही है, वैश्विक दक्षिण के उभरते हुए अर्थव्यवस्थाएं वैश्विक निर्णय-निर्माण में अधिक भूमिका की मांग कर रहे हैं। इस संक्रमण में भारत एक प्रमुख नेतृत्व भूमिका निभा रहा है, और **BRICS, G20** और **SCO** जैसे मंचों का उपयोग कर **21**वीं सदी की वास्तविकताओं और आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करने वाले शासन सुधारों के लिए प्रयास कर रहा है।

BRICS और ग्लोबल साउथ के बारे में

▶ **BRICS** सदस्य **: 4 से 11 देशों तक**

BRICS की शुरुआत 2009 में चार उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं – ब्राजील, रूस, भारत और चीन (BRIC) — के समूह के रूप में हुई थी, जिसका उद्देश्य एक अधिक संतुलित वैश्विक आर्थिक व्यवस्था की स्थापना करना था। 2010 में दक्षिण अफ्रीका के शामिल होने के साथ यह समूह BRICS बन गया, जिससे प्लेटफ़ॉर्म पर एक अफ्रीकी आवाज़ जुड़ी।

वैश्विक विस्तार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम:

● 1 जनवरी 2024 को पांच नए सदस्य – **मिस्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात** – आधिकारिक रूप से BRICS में शामिल हुए, जिससे BRICS का दायरा अफ्रीका और मध्य पूर्व तक बढ़ा।

● बाद में, जनवरी 2025 में, इंडोनेशिया, जो दक्षिण-पूर्व एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, BRICS का 11वां पूर्ण सदस्य बना।

आज, BRICS लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, एशिया और मध्य पूर्व के 11 देशों का एक शक्तिशाली गठबंधन प्रस्तुत करता है, जो वैश्विक दक्षिण के बढ़ते प्रभाव को विश्व मामलों में दर्शाता है।

ग्लोबल साउथ के बारे में:

वैश्विक दक्षिण से तात्पर्य विकासशील देशों से है जो अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका और ओशिनिया में स्थित हैं। इन देशों को अक्सर वैश्विक निर्णय-निर्माण से बाहर रखा गया है, जबकि ये दुनिया की अधिकांश जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह देशों को साझा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे:

➤ गरीबी और आर्थिक असमानता
➤ जलवायु परिवर्तन के खतरे
➤ सीमित वैश्विक प्रतिनिधित्व
➤ व्यापार और प्रौद्योगिकी के लिए समृद्ध देशों पर निर्भरता

BRICS वैश्विक दक्षिण के लिए क्यों महत्वपूर्ण है

BRICS इन देशों को एक शक्तिशाली, गैर-पश्चिमी मंच प्रदान करता है, ताकि ये एक साथ काम कर सकें:

● व्यापार और आर्थिक वृद्धि
● वित्त और निवेश

- सुरक्षा और शांति निर्माण
- प्रौद्योगिकी और नवाचार

☞ उदाहरण: BRICS स्थानीय मुद्राओं में व्यापार को बढ़ावा देता है, जिससे अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता को कम किया जाता है और अर्थव्यवस्थाओं को अधिक आत्मनिर्भर बनाया जाता है।

वैश्विक शासन: समस्या क्या है?

1. **वैश्विक संस्थाओं में प्रतिनिधित्व की कमी**
   वैश्विक संगठन जैसे UN सुरक्षा परिषद, IMF और विश्व बैंक अभी भी 1940 के दशक की शक्ति संतुलन को दर्शाते हैं, जो आज की वास्तविकताओं के अनुरूप नहीं हैं।
   ➤ **उदाहरण:** अफ्रीका के पास UN सुरक्षा परिषद में कोई स्थायी सीट नहीं है, और भारत और ब्राजील जैसे बड़े अर्थव्यवस्थाओं को भी बाहर रखा गया है।
2. **विश्वसनीयता और प्रभावशीलता की कमी**
   ये संस्थाएं अक्सर वैश्विक संकटों में निर्णायक रूप से कार्रवाई करने में विफल रहती हैं, जिसके कारण विकासशील देशों का विश्वास खो जाता है।
   ➤ **उदाहरण:** यूक्रेन युद्ध और गाजा संघर्ष जैसे मुद्दों पर सीमित कार्रवाई।
   ➤ COVID-19 महामारी के दौरान, गरीब देशों को वैक्सीन वितरण में पीछे छोड़ दिया गया, जो वैश्विक असमानता को दर्शाता है।
3. **पश्चिमी देशों द्वारा दोहरे मानक**
   वैश्विक दक्षिण अक्सर पश्चिमी देशों की विदेश नीति की असंगति पर आलोचना करता है।
   ➤ **उदाहरण:** यूक्रेन संकट के दौरान मजबूत प्रतिक्रियाएं और समर्थन, लेकिन गाजा संघर्ष और विकासशील क्षेत्रों में प्रभावित अन्य संकटों के दौरान मूक या विभाजित प्रतिक्रियाएं।

BRICS के रूप में सुधार का मंच

1. **UN और IMF सुधार के लिए समर्थन**
   BRICS के नेता लगातार एक अधिक लोकतांत्रिक वैश्विक व्यवस्था के लिए समर्थन करते हैं, साथ ही UN सुरक्षा परिषद और IMF में सुधार की मांग करते हैं, ताकि विकासशील देशों को अधिक आवाज मिल सके।
   ✔ **उदाहरण:** रूस और चीन ने भारत और ब्राजील के स्थायी UNSC सीटों के लिए प्रयासों का खुलकर समर्थन किया, जिससे कुछ शक्तियों का एकाधिकार टूटता है।

2. **आतंकवाद के खिलाफ ठोस रुख**

   BRICS रियो घोषणा ने भारत में पहलगाम आतंकवादी हमले की निंदा की और आतंकवादी खतरों के खिलाफ एकजुट मोर्चा बनाने के लिए लंबित अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक कन्वेंशन (CCIT) को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

3. **वैश्विक संवाद का विस्तार**

   BRICS अपने मूल सदस्य देशों से आगे बढ़कर अपना दायरा बढ़ा रहा है। इसने इंडोनेशिया को पूर्ण सदस्य के रूप में स्वागत किया और युगांडा और उजबेकिस्तान जैसे देशों के साथ साझेदारी की शुरुआत की, जिससे एक समावेशी और बहु-ध्रुवीय वैश्विक संवाद को बढ़ावा मिला।

4. **भूराजनीतिक संतुलन**

   BRICS वैश्विक राजनीति को आकार भी दे रहा है, गैर-पश्चिमी दृष्टिकोण पेश करते हुए। इसने इजरायल-अमेरिका द्वारा ईरान पर हमलों की आलोचना की और अंतर्राष्ट्रीय कानून का सम्मान करने और शांतिपूर्ण संघर्ष समाधान की अपील की।

भारत की वैश्विक दक्षिण के लिए दृष्टि

1. **बहु-ध्रुवीय विश्व का समर्थन**

   भारत एक ऐसे विश्व की कल्पना करता है, जहाँ कोई एक राष्ट्र वैश्विक निर्णयों पर हावी न हो।

   इंटरनेशनल सोलर एलायंस (ISA) और कोएलिशन फॉर डिजास्टर रेजिलिएंट इन्फ्रास्ट्रक्चर (CDRI) जैसे पहलों के माध्यम से, भारत स्वच्छ ऊर्जा, जलवायु क्रिया और आपदा तैयारी में नेतृत्व करता है, जो सभी के लिए वैश्विक सार्वजनिक वस्त्रों का निर्माण करता है।

2. **दक्षिण-दक्षिण सहयोग को मजबूत करना**

   भारत अपने स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन और डिजिटल नवाचार में विशेषज्ञता और सस्ती समाधान विकासशील देशों के साथ साझा करता है।

   ✔ **उदाहरण:** पश्चिमी अफ्रीका के लिए घाना के वैक्सीनेशन मैन्युफैक्चरिंग हब का समर्थन करना।

   ✔ अर्जेंटीना को स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण खनिजों की खोज में सहायता प्रदान करना।

3. **प्रौद्योगिकी और विकास का पुल बनाना**

   भारत अपनी तकनीकी ताकतों का उपयोग करके वैश्विक दक्षिण को आधुनिक चुनौतियों से निपटने में मदद करता है।

उदाहरण: भारत का OCEANVIZIO, एक AI-समर्थित महासागर निगरानी उपकरण, देशों को जलवायु अनुकूलन, आपदा जोखिम प्रबंधन और सतत महासागर शासन में सहायता करता है।

BRICS में भारत की चुनौतियाँ

1. **चीन का प्रभुत्व**
   चीन की आर्थिक और राजनीतिक ताकत अक्सर BRICS में भारत के प्रभाव को overshadow करती है।
   ➤ **उदाहरण:** भारत बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) का विरोध करता है, विशेष रूप से चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC), जो विवादित क्षेत्रों से गुजरता है।
2. **भूराजनीतिक भिन्नताएँ**
   चीन के साथ सीमा विवाद और यूक्रेन युद्ध पर रूस के साथ भिन्न दृष्टिकोण एकता को प्रभावित करते हैं।
   ➤ **उदाहरण:** चीन ने भारत के पाकिस्तान आधारित आतंकवादियों को UN प्रतिबंधों के तहत सूचीबद्ध करने के प्रयासों को विफल किया।
3. **आर्थिक असंतुलन**
   चीन की GDP अन्य सभी BRICS देशों से बड़ी है, जिससे उसे व्यापार, वित्त और निवेश निर्णयों में अधिक प्रभाव मिलता है।
   ➤ **उदाहरण:** चीन नई विकास बैंक (NDB) के उधारी और निवेश प्राथमिकताओं पर हावी है।
4. **BRICS के भीतर सीमित व्यापार एकीकरण**
   BRICS के भीतर आपसी व्यापार पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं के साथ उनके व्यापार के मुकाबले कम है, जिससे इस समूह की आर्थिक साझेदारी सीमित होती है।
   ➤ **उदाहरण:** भारत का व्यापार अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ BRICS के सदस्य देशों जैसे ब्राजील या दक्षिण अफ्रीका की तुलना में अधिक है।
5. **डिजिटल और तकनीकी मानकों में भिन्नताएँ**
   चीन अपने तकनीकी मानकों और डिजिटल शासन मॉडलों को बढ़ावा देता है, जबकि भारत खुले और लोकतांत्रिक इंटरनेट प्रणालियों को पसंद करता है।
   ➤ **उदाहरण:** डेटा गोपनीयता, साइबर सुरक्षा कानूनों और चीनी तकनीकी प्लेटफार्मों के उपयोग पर भिन्न दृष्टिकोण।

आगे की राह

1. **BRICS संस्थाओं को मजबूत करना**

   भारत को BRICS के भीतर अधिक व्यावहारिक सहयोग बढ़ाना चाहिए:

   ✔ **नई विकास बैंक (NDB) का विस्तार करना**, ताकि वैश्विक दक्षिण देशों में स्वच्छ ऊर्जा और इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण किया जा सके।

   ✔ संयुक्त आपदा प्रतिक्रिया तंत्र विकसित करना, विशेष रूप से महामारी और प्राकृतिक आपदाओं के लिए – भारत के COVID-19 वैक्सीण Maitri कार्यक्रम से सीखते हुए।

   ✔ AI और fintech में साझी प्रौद्योगिकी प्लेटफ़ॉर्म शुरू करना, ताकि पश्चिमी-प्रभुत्व वाले डिजिटल क्षेत्रों का मुकाबला किया जा सके।

2. **वैश्विक वित्तीय सुधारों के लिए नेतृत्व करना**

   भारत को निष्पक्ष प्रतिनिधित्व के लिए समर्थन करना जारी रखना चाहिए:

   ✔ IMF और विश्व बैंक में विकासशील देशों के लिए अधिक मतदान अधिकारों के लिए अभियान चलाना, जहाँ विकसित देशों का अभी भी अत्यधिक प्रभाव है।

   ✔ UN सुरक्षा परिषद के सुधार के लिए दबाव डालना, जहां भारत और ब्राजील की स्थायी सदस्यता की दावेदारी लंबित है, इसके बावजूद उनकी वैश्विक योगदान।

3. **चीन के प्रभुत्व का मुकाबला गठबंधनों के माध्यम से**

   भारत BRICS के भीतर गठबंधन बना सकता है, ताकि चीन के प्रभाव को संतुलित किया जा सके:

   ✔ IBSA (भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका) संवाद मंच को मजबूत करना, जो लोकतांत्रिक मूल्यों और समान वैश्विक हितों को साझा करता है।

   ✔ व्यापार और जलवायु मुद्दों पर एकजुट होना, जहां भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका की समान चिंताएँ हैं, जैसे पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं द्वारा संरक्षणवाद का विरोध करना।

4. **नए BRICS साझेदारों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना**

   भारत को नए जुड़े हुए वैश्विक दक्षिण साझेदारों के साथ अपने संबंधों को गहरा करना चाहिए:

   ✔ इंडोनेशिया के साथ क्षेत्रीय व्यापार और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा पर सहयोग करना।

   ✔ नाइजीरिया की डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर वृद्धि में भारत की UPI और आधार विशेषज्ञता का समर्थन करना।

   ✔ मलेशिया के साथ सेमीकंडक्टर निर्माण और नवीनीकरण ऊर्जा पहलों पर साझेदारी करना।

निष्कर्ष

BRICS में भारत का नेतृत्व इसके बढ़ते कद को दर्शाता है, जो वैश्विक दक्षिण की आवाज़ के रूप में उभर रहा है, साथ ही समावेशी वैश्विक शासन और समान आर्थिक विकास के लिए समर्थन कर रहा है। हालाँकि चुनौतियाँ बनी हुई हैं, भारत की संतुलित रणनीति — जो कूटनीति, प्रौद्योगिकी और विकास सहयोग का संयोजन है — एक अधिक न्यायपूर्ण, बहु-ध्रुवीय विश्व व्यवस्था को आकार देने में मदद कर सकती है। आगे का रास्ता निरंतर बहुपक्षीय जुड़ाव, विकासशील देशों के लिए क्षमता निर्माण, और वैश्विक चुनौतियों जैसे आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और आर्थिक असमानता पर नैतिक नेतृत्व में निहित है।

UPSC PYQ GS 2:

"हाल के वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भारत की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है।" विकासशील देशों की चिंताओं को दूर करने के लिए भारत के प्रयासों पर चर्चा करें। (मूल्यांकन 2018)

Prelims PYQs

प्रश्न: 'न्यू डेवलपमेंट बैंक' शब्द, जो कभी-कभी समाचारों में देखा जाता है, किस द्वारा स्थापित एक बैंक को संदर्भित करता है? (Prelims 2015)
(a) ASEAN
(b) BRICS
(c) OECD
(d) G20

➤ **उत्तर:** (b) BRICS

Result Mitra

Prelims Practice Questions:

प्रश्न 1: 2024-2025 के विस्तार के दौरान निम्नलिखित में से कौन-कौन से देश BRICS में शामिल हुए?

1. इंडोनेशिया
2. मिस्र
3. नाइजीरिया
4. सऊदी अरब

सही उत्तर चयन करें:

(a) 1, 2 और 4 केवल

(b) 2, 3 और 4 केवल

(c) 1, 2, 3 और 4

(d) 1 और 4 केवल

➤ **उत्तर:** (a) 1, 2 और 4 केवल

Result Mitra